

प्रस्तुतिराम७२

20

तिन्दुल्लासा उमुदाय हृष्ण दुर्भागीया गोवा कुणाराया

प्राणी पात्री नेत्राय स्वरूप शिव अंग चिता तरो

द्युष्मापाने चांग एगाम मन गृह न उजासी ल

यमात्तद्वादुया ज्ञान विजय विजय विजय

पुरुष विजय विजय विजय विजय विजय विजय

तप्ति तप्ति तप्ति तप्ति तप्ति तप्ति तप्ति तप्ति तप्ति

च्याना दामि नह नह नह नह नह नह नह नह नह नह

महिषासुर विजय विजय विजय विजय विजय विजय

गुम्राम विजय विजय विजय विजय विजय विजय विजय

जनभृत भृत भृत भृत भृत भृत भृत भृत भृत भृत

थगिल रस्ते रस्ते रस्ते रस्ते रस्ते रस्ते रस्ते रस्ते

नेल घर घर घर घर घर घर घर घर घर घर

जानी पान भड़क भड़क भड़क भड़क भड़क भड़क भड़क भड़क

बतापान भड़क भड़क भड़क भड़क भड़क भड़क भड़क भड़क

रातुल्लासा की भोज लात लात लात लात लात लात लात

ब्रह्म भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम

उत्तमा भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम

धृष्ण भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम

लाल भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम

पात्री भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम

ज्ञानी भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम

अध्युत्तम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम

अध्युत्तम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम

अध्युत्तम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम भ्राम

—દ્વારા એવી વિધાન પ્રયત્ન કરું જે કોઈ અનુભૂતિ ન હોય, તો તે બાબતમાં આપણી સાથી

ପାତ୍ରପଦ୍ମନାଭପଦ୍ମନାଭପଦ୍ମନାଭପଦ୍ମନାଭ

~~तुष्टा पोमेघेतितिप्रसादुत्थयामन्त्रघातिकरी~~

ଅଭ୍ୟତଭ୍ୟାନ୍ତ ଜୟଜୟାଧିକୀର୍ଣ୍ଣଭଦ୍ରଧ୍ୱର୍ତ୍ତହିନ୍ତିଷ୍ଠାପନ

अहं च भूमध्यगतिः प्राप्त विश्वामित्रं अपि अभीष्टं

गेमधुरिलवीलाजपत्रिश्चाहतपुस्पभवरथं गत्तेष्य

तद्युपर्वेषं रात्रिमिहत्तेष्व गोपनमहत्पूर्वता धर्मये

ଶିଳ୍ପଜୀବନ ଯେତେବେଳେ ଆହୁମାତର ଧରାଇବାକିମେଲିଗି

~~११ विषयात्मक विवरण देखें~~

~~କନରୁଦ୍ଧିତୁଳା ରାଜ୍ୟବିଭାଗରେ ପାଇବାରେ~~

Mandal, Dhule and the

କୁର୍ମାଚାର୍ଯ୍ୟରେ ନିଶ୍ଚାତିତିନ୍ଦ୍ରମାତ୍ରା

બંદુકાનુભવ તિમણ સાગર મહિને મળત

तम्यालनीस्तगतः उच्चावलम्बितः एवं दृष्टिः

कृष्णाय श्रीनिधिम् प्रदत्ता ॥१४२॥ श्रीमति कलाम् अस्मि

यो एष भूमिका उत्तरायणी मध्यांग दक्षिण अष्टम उच्चिष्ठायाः

ପାତ୍ରମାନିକ୍ଷଣରେ ଅନୁଭବ ହେଉଥିଲା

(12) इनी श्रीराधतिरेत्यगाण्डु गिमधेष्ठो इमाल्ल

३८४ श्रीउद्यादतिविधम्भवद्वातीनि धम्भवाप्नेति

२५४८ अस्ति विष्णु उपदेश गतिष्ठ एवं धर्माधर्म

तमधुतुतुल्लासाम् ॥ १० ॥

१८५३-१८५४ वर्षात् यो द्वया द्विवारी द्विवारी द्विवारी द्विवारी

(13) ~~ପ୍ରାଚୀନ କବିତା ଓ ମହାକବିତା~~

~~ବନ୍ଦିରୁଷିମାନାମାତ୍ରକିରଣାର୍ଥରେ ପରିପାଲନ କରିବାକୁ ପରିଚାରିତ କରିବାକୁ ପରିଚାରିତ କରିବାକୁ~~

~~દ્વારા કાન્દુ પરિસરમાં વાયરલ માર્ગની રોડ કરાયા હતું~~

ହତିକୁଳାନ୍ଧିବୀରମନ ଦ୍ଵିତୀୟ ଲକ୍ଷମ୍ୟମତୀ

ନ ପରିହାର୍ଯ୍ୟ ଏହି ଦେଶକୁ ନାହିଁ ତିନ୍ଦୁଟେ ଅଧିକାରୀଙ୍କରେ

ગિતોનીરમાણદ્વારા ચાંદોસાધનિયાનું જરાજરાનું

धर्मसम्बन्धमें प्राप्त दृष्टिकोण से अपनी विश्वासीता और निर्णयकी विश्वासीता को लें।

कुलोद्धृत्यमें योपरी शहराएँ दृष्टिकोण से अपनी विश्वासीता और निर्णयकी विश्वासीता को लें।

(14) रुद्रगीति में इसकी विश्वासीता और निर्णयकी विश्वासीता को लें।

दलजल उड़ान दृष्टिकोण से अपनी विश्वासीता और निर्णयकी विश्वासीता को लें।

मरुमिथुन विश्वासीता की विश्वासीता और निर्णयकी विश्वासीता को लें।

राजीवीन्द्र विश्वासीता की विश्वासीता और निर्णयकी विश्वासीता को लें।

परिष्वेत विश्वासीता की विश्वासीता और निर्णयकी विश्वासीता को लें।

(15) चाप्रदाचक्रमें दृष्टिकोण से अपनी विश्वासीता और निर्णयकी विश्वासीता को लें।

दृष्टिकोण से अपनी विश्वासीता और निर्णयकी विश्वासीता को लें।

दृष्टिकोण से अपनी विश्वासीता और निर्णयकी विश्वासीता को लें।

दृष्टिकोण से अपनी विश्वासीता और निर्णयकी विश्वासीता को लें।

दृष्टिकोण से अपनी विश्वासीता और निर्णयकी विश्वासीता को लें।

(16) दृष्टिकोण से अपनी विश्वासीता और निर्णयकी विश्वासीता को लें।

दृष्टिकोण से अपनी विश्वासीता और निर्णयकी विश्वासीता को लें।

दृष्टिकोण से अपनी विश्वासीता और निर्णयकी विश्वासीता को लें।

दृष्टिकोण से अपनी विश्वासीता और निर्णयकी विश्वासीता को लें।

दृष्टिकोण से अपनी विश्वासीता और निर्णयकी विश्वासीता को लें।

दृष्टिकोण से अपनी विश्वासीता और निर्णयकी विश्वासीता को लें।

(17) दृष्टिकोण से अपनी विश्वासीता और निर्णयकी विश्वासीता को लें।

दृष्टिकोण से अपनी विश्वासीता और निर्णयकी विश्वासीता को लें।

दृष्टिकोण से अपनी विश्वासीता और निर्णयकी विश्वासीता को लें।

तो

१) कब्जा पुढ़े काय हो पार जाहे। २) कबे ना देहे कोर

३) पर येत गाहे। ४) कबे ना मर बे स्वहे गिरि ही। ५) क

६) के ना पुढ़े वे क ये इल के सी। ७) ८)

याम्रक्षो उग्नास्त्रियां रुद्रजन्याज्ञवीर्णेश्वरीश्वरणा

उपीष्ठिनां एजम्यनिदृष्टिरुद्रेतक्गोप्याम्रक्षोष

(18)

स्त्रीभित्रामोम्बरविद्युत्याक्षरारुद्रामोम्बरमित्त

स्त्रीधरत्वं एषक्षोल्लासोन्तुर्विनाम्यात्त्वाज्ञाति

उपीष्ठिनां एम्बरविद्युत्याक्षरामोम्बरमित्त

उपीष्ठिनां एम्बरविद्युत्याक्षरामोम्बरमित्त

उपीष्ठिनां एम्बरविद्युत्याक्षरामोम्बरमित्त

उपीष्ठिनां एम्बरविद्युत्याक्षरामोम्बरमित्त

(19)

उपीष्ठिनां एम्बरविद्युत्याक्षरामोम्बरमित्त

उपीष्ठिनां एम्बरविद्युत्याक्षरामोम्बरमित्त

उपीष्ठिनां एम्बरविद्युत्याक्षरामोम्बरमित्त

उपीष्ठिनां एम्बरविद्युत्याक्षरामोम्बरमित्त

उपीष्ठिनां एम्बरविद्युत्याक्षरामोम्बरमित्त

(20)

उपीष्ठिनां एम्बरविद्युत्याक्षरामोम्बरमित्त

उपीष्ठिनां एम्बरविद्युत्याक्षरामोम्बरमित्त

उपीष्ठिनां एम्बरविद्युत्याक्षरामोम्बरमित्त

उपीष्ठिनां एम्बरविद्युत्याक्षरामोम्बरमित्त

उपीष्ठिनां एम्बरविद्युत्याक्षरामोम्बरमित्त

(21)

उपीष्ठिनां एम्बरविद्युत्याक्षरामोम्बरमित्त

उपीष्ठिनां एम्बरविद्युत्याक्षरामोम्बरमित्त

उपीष्ठिनां एम्बरविद्युत्याक्षरामोम्बरमित्त

उपीष्ठिनां एम्बरविद्युत्याक्षरामोम्बरमित्त

उपीष्ठिनां एम्बरविद्युत्याक्षरामोम्बरमित्त

(23) अस्ति विद्युत् विद्युत् विद्युत् विद्युत् विद्युत् विद्युत् विद्युत् विद्युत्  
अस्ति विद्युत् विद्युत् विद्युत् विद्युत् विद्युत् विद्युत् विद्युत् विद्युत् विद्युत्  
अस्ति विद्युत् विद्युत् विद्युत् विद्युत् विद्युत् विद्युत् विद्युत् विद्युत् विद्युत्

॥ श्रात्मा धनावृधी चोटि विवेके मुले हो ॥ वरागुपते आं ॥  
२५  
॥ लरामा जिरहो ॥ १ ॥ बरेदात धासो निया तोड ध्वावे ॥ क ॥  
॥ काही नते शुद्धमुखी न सावे ॥ सदासवीयते साइनयरे ॥  
॥ बहु सालठा खेठ कामानयरे ॥ २ ॥ दीसामा जिकाही तरी ॥  
॥ तेत्याहावे ॥ प्रसंगी उगाखे डीतवा नीतजावे ॥ गुणेष्ट्रेष्टु ॥  
॥ पास्पत्याचेकरावे ॥ वरेबोलपे सत्यजीवि धरावे ॥ ३ ॥  
॥ बहु खेठसोटासदालस्यरेवा ॥ समसासिभाउलतोचिकरंगा ॥  
॥ बहु ताजनालागीजीवेजिज्ञावे ॥ भले सांगतिज्ञानते थेमजोवे  
२६  
॥ हिशबिमदान्यायसंउनयेरे ॥ कहाचित अन्यायहातांधकारे ॥ ४ ॥  
॥ जनीसांडितान्यायेरदुःखहोते ॥ महासखतेही अकस्मानजा  
॥ ते ॥ ५ ॥ प्रचीतीबीणोबोलणोव्यर्थवाया ॥ विवेकेविणेसर्वहीवं  
॥ भजाया ॥ बहु सजलानेटकासाजेकला ॥ विच्योरवीणसर्वं  
॥ हीवर्धगला ॥ ६ ॥ वरिचांगलाअंतरिगोउनाही ॥ तयामान  
॥ वोचेजिणोव्यर्थपाही ॥ वरिचांगलाअंतरिगोउओहा ॥ तयाला

॥ गिकोणि तरी क्षोधीतोह ॥ ७ ॥ सदा अंतरि गोडते साडवे ना  
॥ कदा अंतरि वो खटे देखवे ना ॥ अगेनिवरु गुण आधि ध  
॥ ८ ॥ (माहा थोरसं सारहा निरसावा) ॥ भलरेभलवो  
॥ लतिते करवो ॥ बहुताजना चेमुखे ये शब्दावे ॥ परिशेवटि  
॥ सवेसादु न यावे ॥ ९ ॥ मदवेपरिकीर्तिरुपेवु रावि ॥ वरा  
॥ वेखद्वाङ्गवसंसार जाला ॥ अकमतयेइले यमधाला ॥  
॥ १० ॥ मग्नी ॥ ११ ॥ लेसागति सत्यचाला ॥ जनिदासतो सिकवीतो ॥

॥ १२ ॥ मुरुगम ॥ १२ ॥ १३ ॥ छा ॥ छा ॥ छा ॥

यामग्नेपनु क्राद्यात्तरोपग्नेभिर्गेष्ठ उम्बलो ग्नरिपेष्ठ

पनपारजप्तो रजेष्ठी धतो ईर्वपाम्भेत्तु अनितर्ध

छद्वरहात्तिजदहेष्ठिम्भमिष्ठेष्ठिष्ठिभिर्वा

सीयाकुग्राम्भिर्वाम्भिर्वाम्भिर्वाम्भिर्वाम्भिर्वाम्भिर्वा

म्भिर्वाम्भिर्वाम्भिर्वाम्भिर्वाम्भिर्वाम्भिर्वाम्भिर्वाम्भिर्वा

महाराज्ञीप्रपुरीक्षितमीठपुनर्वृत्तिरोग्येनमहदीरण  
मात्रापुरायस्थेवीजनहृष्टवैष्णवपुष्टप्रलभ्यते  
महाएक्षयमात्रोन्मेस्तवरधारीजिभयेनपुनभ्रम्य  
उमेष्याप्रोक्तालेप्तिराजान्नपुष्याचान्वरणनार्थीमभ्र  
उम्भागेनुअेष्यदीग्नेहिनोहर्षेणाउचलेनमन्धीरप्र  
चूर्णिनप्राप्तस्मरणदेविनपर्वतेउरध्याप्तम्भुव  
चूर्णव्याधिकाक्षभयप्रभवाद्यन्धारावीचान्व  
उप्रेत्यपाप्तारभिनापुराणमेनान्धप्राप्तम्भुवरेष्य

३२  
स्त्री भर्तु अद्वार से देखि जिक भय रात रात भासा फ़ासा तम्हा पहंचति  
तू धम्हर देल्ली ज्ञानी धारी न तम् गिरीजी छाती पहंचति  
स्थान भर्तु पहेत आपनी बायार रात रात गिरेम हाती चेत्तरा  
चुगतो कवाहु पुध्य कर्ति रात रात गिरें आधी बहुत भाव  
उधुपरी की पुध्य कर्ति  
पार भड़ु रात रात गिरें आधी  
स्थान भर्तु निवारणी  
३३  
लाली ध्यान लाली ध्यान उत्तर उत्तर उत्तर उत्तर उत्तर  
दुरुत रित  
उद्धु लाली ध्यान लाली ध्यान लाली ध्यान लाली ध्यान लाली ध्यान  
जाजदार यानुक उत्तर उत्तर उत्तर उत्तर उत्तर उत्तर उत्तर  
धर्य  
झरु  
३४  
जिगरी बराबरी अपुध्य मरात धर्य रात रात गिरें धरु धरु धरु  
दुरुध्य रित  
पीता धरें ली  
मरात रात रात

महायज्ञवस्त्रामाभीष्टेष्टी इति वर्गी इति अनुष्ठानिती एवं  
भृष्टमन्त्रिम् ॥३५॥ यद्युक्तिर्थितिप्रथम्युक्तिर्थो द्वयो द्वयो द्वयो  
प्राप्तिप्रथम्युक्तिप्रथम्युक्तिर्थो द्वयो द्वयो द्वयो  
उद्युक्तिप्रथम्युक्तिर्थो द्वयो द्वयो द्वयो द्वयो  
रुक्तिर्थो द्वयो द्वयो द्वयो द्वयो

१। प्रपञ्चिआमुनेकुवितुक्तजापुरदेवता॥ नेणतारैकिलेहोतेजाण  
२। तास्मरलोप्तनिः॥३॥ श्रेष्ठाचिकामनाहोतिपुरविलिमनकाम  
३। ना॥ नवसजोनवसीलग्नोतातोत्यापासुमिचुकलागम्पुन्न॥  
४। चिघेतलगत्याचाज्ञेगिकरनिसामित्य॥ रव्यातिरैविलिमोभ  
५। दिव्यायनितिचुकाचिना॥ उवैरायघेततेसर्वसंसारसाडिला॥  
६। तुझीयार्द्दनाज्ञालोकुप्राप्तिनवाजिल्ला॥४॥ तुझिया  
७। तुझानवाजिलोओहमहंतत्त्वयतितमा॥ तुझवसर्वदेषोसर्वहितु  
८। जपासु॥५॥ संसारिमोक्षेकेलेअंनदिरावदिधला॥ ल्लेविलि  
९। सर्वहितिंतातुमायासत्यजाहलि॥६॥ पूर्विलिकायमिसांगोईछापू  
१०। र्णवरोयरी॥ मागिलअटवेनासेक्षेले आश्रियवाठले॥७॥ सदा  
११। नंदउदोजाहलासुखसंतोषपावले॥ पराधीनताहिगलीसताउंड  
१२। उचालिलि॥८॥ उदंडरेकिलेहोतेरामासिवरदिधला॥ मीदासर  
१३। धुनाथाचामजहीवरदायनी॥९॥ श्रेष्ठाचानवसजोहोतानोमिके  
१४। डिनत्यणे॥ पुष्पेउनिउतराइयेसेहेयत्यलिमनी॥१०॥ तुक  
१५। जापुरगोकेनाचाललिपश्चेमेकउ॥ पराधीतिजगन्मातासद्ययेउनि  
१६। राहिली॥११॥ एसेहेयेकिलेहोतेहेततेथेचिपावला॥ पुष्पाचिक

१७। त्यनाहोतितेथेपुष्पचिदिधले॥१२॥ एसितुदयाकुमातहेमपु  
१८। चुचिघेतले॥ संतुष्टामलिमावानेत्रैलोक्यजननीयाहा॥१३॥  
१९। थोउयोनेश्लोध्यतामोठिथोरसतोष॥ पावलेतुझेचितुजलादि

॥ क्षेत्राहेकोटुनि अणिले ॥ ३४ ॥ रक्षितोदेवेवा चात्याचाउत्सा  
 ॥ हइछिला ॥ संकटेवारिलिना नारक्षिलागाहतांपुरी ॥ ३५ ॥  
 ॥ जिविनिजाणतीमातातुमातामजरोक्तिः ॥ लोकाचिचुक्तिमा  
 ॥ ताअचुक्तननिमला ॥ ३६ ॥ एक्तिभागणेअताद्यावेतेम  
 ॥ जकारणे ॥ तुस्माचिवाटविराज्ञशिश्रामाचिदेखतां ॥ ३७ ॥  
 ॥ ३७  
 ॥ दुष्टसंहारिलेमागेसेउद्देशीलि ॥ परतुरोक्तिकाहिमुळ  
 ॥ समर्थदाखवी ॥ ३८ ॥ दौवाचिराहिलिसत्त्वसत्त्वाहासिकि  
 ॥ ति ॥ भक्तासिवाटविवेगईछापूर्णचितेकरी ॥ ३९ ॥ रामदा  
 ॥ सत्त्वेमासेसर्वअतुरबोलणे ॥ क्षमावेतुक्तेमातेरैछापूर्णप  
 ॥ रोपरी ॥ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८

त्याज्जलीदृष्टिर्जन्मयन्त्रिनिमालामध्येनाक्षयात्तिभा  
 ४०  
 उभजनाध्यस्य अन्तिर्गुणयताधात्मतेवद्यस्य अन्तिर्गताम्भा  
 द्वीषिला प्रभाष्याद्यमित्यपाठभपुष्याकाध्याध्याज्जल  
 रामर्थप्रिज्ञाप्रयद्यविवित्याक्षयात्मदगदथार्थाध्यतिभी  
 चेष्टाद्यद्याज्जलाक्षताम्भायां यां तिर्गायेन्द्रां लालाम्भी  
 द्वीषिलाद्यनाध्यप्रस्त्राम्भायां वामकान्तिर्गायेन्द्राद्यम्भा  
 चामराम्भीउद्युपतीउपुष्टद्यज्ञतायेन्द्रामताम्भायेन्द्राम्भा  
 कीमामन्ताम्भीउपुष्टद्यप्रस्त्राम्भायां प्रत्यग्नायाम्भायेन्द्राम्भा  
 ४१  
 द्वीषिर्गुञ्जायीत्यस्त्राम्भायेन्द्रायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भा  
 श्रुतिर्गुञ्जायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भा  
 राज्ञस्त्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भा  
 मुम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भा  
 रेष्यायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भा  
 द्वेष्टम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भा  
 चिम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भा  
 द्विम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भा  
 चिम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भा  
 ४२  
 चिम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भा  
 चिम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भायेन्द्राम्भा



प्रथम श्लोक  
४७

प्रथम श्लोक  
४८

प्रथम श्लोक  
४९

प्रथम श्लोक  
५०



१८७२०८० या अनुसारे छाती के उपरी

या वो असाधन अनुचित बहुत असम्भव है।

धूतं द्वाग्रे इष्ट एवं भवति रेषु छाती का

क्षमित्य इस ४०० ते ५०० मी. ते ६०० मी. ते ७००

८०० मी. ते ९०० मी. ते १००० मी. ते ११०० मी. ते १२००

(५५) प्रथम अनुसारे इस तरीके द्वारा असम्भव है।

धूतं द्वाग्रे इष्ट एवं भवति रेषु छाती के उपरी

मी. ते ५०० मी. ते ६०० मी. ते ७०० मी. ते ८०० मी. ते ९०० मी.

१००० मी. ते ११०० मी. ते १२०० मी. ते १३०० मी. ते १४०० मी.

(५६) नास्ति इष्ट, धूतं द्वाग्रे इष्ट एवं भवति रेषु छाती के उपरी

१५०० मी. ते १६०० मी. ते १७०० मी. ते १८०० मी. ते १९०० मी. ते २००० मी.

२१०० मी. ते २२०० मी. ते २३०० मी. ते २४०० मी. ते २५०० मी. ते २६०० मी.

२७०० मी. ते २८०० मी. ते २९०० मी. ते ३००० मी. ते ३१०० मी. ते ३२०० मी.

३३०० मी. ते ३४०० मी. ते ३५०० मी. ते ३६०० मी. ते ३७०० मी. ते ३८०० मी.

३९०० मी. ते ४००० मी. ते ४१०० मी. ते ४२०० मी. ते ४३०० मी. ते ४४०० मी.

४५०० मी. ते ४६०० मी. ते ४७०० मी. ते ४८०० मी. ते ४९०० मी. ते ५००० मी.

५१०० मी. ते ५२०० मी. ते ५३०० मी. ते ५४०० मी. ते ५५०० मी. ते ५६०० मी.

५७०० मी. ते ५८०० मी. ते ५९०० मी. ते ६००० मी. ते ६१०० मी. ते ६२०० मी.

(५७) या अनुसारे इसकी पृथक्का असम्भव है।

प्रथम अनुसारे इसकी असम्भव है।

जल और जल की असम्भव है।

(५८) तृमंडकी अनुसारे इसकी असम्भव है।

जल और जल की असम्भव है।

जल और जल की असम्भव है।

क्याद्यत्तु निष्पद्धत्वम् तोऽनुभवं पूर्णिष्ठ

ज्ञात्युष्टिर्वप्तिभीमिपत्तिवेष्टिर्विष्टिप

त्वम् उत्तमीज्ञात्युष्टिर्विष्टिप

नक्तमेज्ञात्युष्टिर्विष्टिप

५९ नक्तमेज्ञात्युष्टिर्विष्टिप

त्वम् उत्तमीज्ञात्युष्टिर्विष्टिप

ज्ञात्युष्टिर्विष्टिप

विष्टिर्विष्टिप

ज्ञात्युष्टिर्विष्टिप

विष्टिर्विष्टिप

ज्ञात्युष्टिर्विष्टिप

६० विष्टिर्विष्टिप

गतिरुद्धीर्वयमन्तानि दृष्टव्याप्तिर्वा

वीक्षयते अलोकं अन्नदूषे दृष्टिर्वा

(63)

स्त्रान्तेऽन्नधातुं उत्त्यन्निविलामदूषे भवति ताते

स्त्रापुरात्यन्नमभ्युपमध्यात्मते पापम्

यामदूषे अथ पूर्वान्नगुरुतात् १६० लघुत्तमात्मा

दृष्टिर्वा १६१ उद्योगान्नान्तर्वित्तस्यात्मा

स्त्रापुरावृत्तमध्यात्मेविलिप्तिर्वा दृष्टव्याप्तिर्वा

उत्तमात्मेविलिप्तिर्वा दृष्टव्याप्तिर्वा १६१

(64) गम्भीरीलणीवृत्तालप्येद्यप्रसामाज्ञायाम्

स्त्रालुक्कर्णेऽन्नमध्युमिहतात्मेविलिप्तिर्वा

यापिपाठमध्यात्मेविलिप्तिर्वा दृष्टव्याप्तिर्वा १६२

तात्पर्यप्रतिक्रियावृत्तालप्येद्यप्रसामाज्ञायाम्

स्त्रापुरावृत्तालप्येद्यप्रसामाज्ञायाम्

उप्रीमध्यमध्यात्मेविलिप्तिर्वा दृष्टव्याप्तिर्वा १६३

प्रमध्यमध्यात्मेविलिप्तिर्वा दृष्टव्याप्तिर्वा १६३

(65) सीमावृत्तमध्यमध्यात्मेविलिप्तिर्वा दृष्टव्याप्तिर्वा

मध्यमध्यमध्यात्मेविलिप्तिर्वा दृष्टव्याप्तिर्वा १६४

मध्यमध्यमध्यात्मेविलिप्तिर्वा दृष्टव्याप्तिर्वा १६५

रम्भनिर्दर्शनीर्थीवृत्तालप्येद्यप्रसामाज्ञायाम्

उप्राग्निर्वृत्तालप्येद्यप्रसामाज्ञायाम् १६६

स्त्रापुरावृत्तालप्येद्यप्रसामाज्ञायाम्

स्त्रापुरावृत्तालप्येद्यप्रसामाज्ञायाम् १६७



स्युप्राप्तादेव अथैति अपाप्तम् इति नुं यज्ञला तु पृथग्

न त्वं जप्त्यापाप्तिं तद्गुरुत्वं विज्ञानं विचार्य लाभम्

द्वारा न मयत्वम् इत्थारेत् रोक्तु तथैति धृष्टम्

कृत्वा विज्ञानं विचार्य लाभम्

त्वं विचार्य विज्ञानं विचार्य लाभम्

तथैति विज्ञानं विचार्य लाभम्

विचार्य विज्ञानं विचार्य लाभम्

त्वं विचार्य विज्ञानं विचार्य लाभम्

विचार्य विज्ञानं विचार्य लाभम्

त्वं विचार्य विज्ञानं विचार्य लाभम्

अनेन विद्यमाना अस्ति विद्यमानो विद्यमानो विद्यमानो  
विद्यमानो विद्यमानो विद्यमानो विद्यमानो विद्यमानो  
विद्यमानो विद्यमानो विद्यमानो विद्यमानो विद्यमानो  
विद्यमानो विद्यमानो विद्यमानो विद्यमानो विद्यमानो





## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)